मार्कफिल्ड हायब्रिड सीड्स प्रा. लि.
बी-३, अतिरिक्त औद्योगिक वसाहत, जालना, कस्टमर केअर मो. क्रमांक ९४०५७८२६६८

स्वीट कॉर्न

वाण:- स्वीटी, स्वीट हार्ट

जमीन:- चांगल्या निचऱ्याची वालुकामय चिकणमाती किंवा चिकणमाती माती स्वीट कॉर्न लागवडीसाठी सर्वोत्तम आहे. यासाठी मातीचे pH मूल्य ५.५ ते ७.० च्या दरम्यान असावे. योग्य निचरा व्यवस्था असल्यास, वाळूच्या जमिनीतही ते चांगले वाढवता येते कारण पाणी साचल्याने झाडांच्या वाढीवर परिणाम होऊ शकतो.

हवामान:- उष्ण आणि दमट हवामान स्वीट कॉर्न लागवडीसाठी चांगले असते. हे पीक १८°C ते ३०°C तापमानात चांगले वाढते. वनस्पतींच्या योग्य वाढीसाठी मुबलक सूर्यप्रकाश आणि नियमित पाऊस आवश्यक असतो. म्हणून, हे पीक विशेषतः पावसाळ्यात आणि उष्ण हंगामात घेतले जाते.

पेरणीची वेळ: खरीप हंगामात - जूनच्या शेवटच्या आठवड्यापासून जुलैच्या पहिल्या आठवड्यापर्यंत.
रब्बी हंगामात - ऑक्टोबरचा दुसरा पंधरवडा. उन्हाळा हंगामात - मार्चचा दुसरा पंधरवडा.
प्रति एकर बियाण्याचा दर आणि रोपांमधील अंतर-
१. स्वीट कॉर्न लागवडीसाठी बियाण्याचा दर प्रति एकर सुमारे ४-५ किलो आहे.
२. स्वीट कॉर्न रोपांच्या पुनर्लागवडीसाठी, २०-३० सेमी अंतरावर लागवड करण्याची शिफारस केली जाते.
३. रोपांमधील अंतर ६०-७५ सेंटीमीटर ठेवले जाते.

खत व्यवस्थापन: स्वीट कॉर्न लागवडीमध्ये खते खूप महत्त्वाची असतात. यासाठी प्रति एकर ८-१० टन शेणखत घाला, ज्यामुळे जमीन सुपीक होण्यास मदत होते.

क्र.	प्रति हेक्टर रासायनिक खते	नायट्रोजन (किलो)	फॉस्फरस (किलो)	पोटॅश (किलो)
1	पेरणीच्या वेळी	30	60	40
2	१५ दिवसांनी	35	00	00
3	३० दिवसांनी	35	00	00
	एकूण	100	60	40

रोग आणि कीटक नियंत्रण :-
फर्टेरा (ड्युपोंड) ४ किलो प्रति एकर किंवा व्हर्टिको (सिंजेंटा) २.५ किलो प्रति एकर खतासोबत वापरल्याने २१ दिवस रस शोषक कीटकांपासून संरक्षण मिळते.

अ. क्र.	रोग/कीटक	नियंत्रण	मात्रा प्रति ली पाणी में
1	मक्यावरील करपा	साफ	०२ ग्रॅम प्रति लिटर
2	पानांवरील करपा	कीटोशी	०२ मि. प्रति लिटर
3	डाऊनी मिल्ड्यू -	रिडोमिल गोल्ड	02 ग्रॅम प्रति लिटर
4	चारकोल रॉट -	रोको	02 ग्रॅम प्रति लिटर
5	रस्ट रोग-	इंडोफिल	02 ग्रॅम प्रति लिटर
6	कॉर्न बोरर	फोरटेनज़ा डुओ	06 मि. लिटर प्रति किलो (बियाणे प्रक्रिया)
		कोराजन	०५ मिली प्रति १५ लिटर.
7	मावा	कॉन्फीडॉर	०.५ मि. ली पर ली
8	लीफ हॉपर	ॲक्टरा	०६ ग्रॅम प्रति १५ लिटर
9	फॉल आर्मी वर्म	फोरटेनज़ा डुओ	०६ मि. लिटर प्रति किलो (बियाणे प्रक्रिया)
		ट्रेसर	०५ मिली प्रति १५ लिटर.

सिंचन व्यवस्थापन: स्वीट कॉर्न लागवडीत योग्य सिंचन व्यवस्थापन खूप महत्वाचे आहे. खरीप हंगामात नैसर्गिक पाऊस पुरेसा नसल्यास, आवश्यकतेनुसार सिंचन करावे. रब्बी हंगामात स्वीट कॉर्न ४-६ पाणी द्यावे लागते, विशेषतः दाण्याच्या विकासादरम्यान आणि धान्याच्या दुधाळ अवस्थेत. ठिबक सिंचन प्रणाली सिंचनासाठी सर्वात योग्य आहे, कारण ती पाण्याची बचत करते आणि झाडांना समान प्रमाणात पाणी देते. सिंचन करताना, शेतातील पाण्याचा निचरा होण्याची व्यवस्था काळजी घ्या, जेणेकरून पाणी साचणार नाही आणि पिकाचे नुकसान होणार नाही. जड जमिनीला ४-५ आणि हलक्या जमिनीला ७-८ पाणी द्यावे लागते.

तण व्यवस्थापन: स्वीट कॉर्न पिकात तणांचे नियंत्रण खूप महत्वाचे आहे कारण ते पिकांच्या पोषक तत्वांचा वापर करतात आणि पिकाच्या वाढीवर परिणाम करतात. तण नियंत्रणासाठी, शेत नियमितपणे स्वच्छ करा आणि तण काढा. याशिवाय, तणनाशकांच्या वापराने तण सहजपणे नष्ट होतात आणि पीक चांगले वाढते.

स्वीट कॉर्न पिकात तण नियंत्रण-
१. स्वीट कॉर्न पिकातील तणांच्या समस्येवर नियंत्रण ठेवण्यासाठी शेताची नियमित खुरपणी करणे महत्वाचे आहे.
कोळपणी करा आणि तणनाशके वापरा जसे की-
2. बायर लॉडिस हर्बिसाइड - लॉडिस हर्बिसाइड टेम्बोट्रिऑन 42% SC
(टेम्बोट्रिओन ४२% एससी) प्रति एकर १५० मिली दराने फवारणी करा.

काढणी: स्वीट कॉर्न काढणीसाठी योग्य वेळ खूप महत्वाची आहे. मक्याचा बाह्य थर हिरवा आणि चिकट असताना त्याची कापणी करावी. हे सहसा पेरणीनंतर ६०-९० दिवसांनी घडते.

टीप:- वरील सर्व माहिती आमच्या संशोधन केंद्रात केलेल्या प्रयोगांवर आधारित आहे. वेगवेगळ्या ठिकाणी वेगवेगळ्या हवामान, मातीचा प्रकार आणि ऋतूंमुळे वरील माहिती वेगवेगळी असू शकते.

मार्कफिल्ड हायब्रीड सीड्स प्रा. लि.
बी-३, अतिरिक्त औद्योगिक वसाहत, जालना, कस्टमर केअर मो. न. 9405782668

स्वीट कॉर्न

किस्में:- स्वीटी, स्वीट हार्ट

मिट्टी (Soil): :- स्वीट कॉर्न की खेती के लिए अच्छे जल निकास वाली बलुई दोमट या चिकनी मिट्टी सबसे अच्छी होती है। इसके लिए मिट्टी का pH मान 5.5 से 7.0 तक होना चाहिए। इसे रेतीली मिट्टी में भी अच्छे से उगाया जा सकता है, बस जल निकास की व्यवस्था अच्छी हो, क्योंकि पानी का जमाव पौधों के विकास को प्रभावित कर सकता है।

जलवायु (Climate):- स्वीट कॉर्न की खेती के लिए गर्म और आर्द्र जलवायु अच्छा होता है। यह फसल 18°C से 30°C तक के तापमान में सबसे अच्छे से उगती है। इसे भरपूर धूप और नियमित बारिश की आवश्यकता होती है, जिससे पौधों का विकास सही तरीके से हो सके। इसलिए, यह फसल खासकर मानसून और गर्म मौसम के दौरान लगाई जाती है।

बुवाई का समय (Sowing Time): खरीफ ऋतु में - जून के अन्तिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम सप्ताह तक।
रबी ऋतु में - अक्टूबर का द्वितीय पखवाडा। जायद ऋतु में - मार्च का द्वितीय पखवाडा।

बीज दर प्रति एकड़ और पौधों की दूरी-

1. स्वीट कॉर्न की खेती के लिए बीज की दर लगभग 4-5 किलोग्राम प्रति एकड़ होती है।
2. स्वीट कॉर्न के पौधों की रोपाई के लिए 20-30 सेंटीमीटर की दूरी पर पौधे लगाने की सिफारिश की जाती है।
3. पौधों की बीच की दूरी 60-75 सेंटीमीटर रखी जाती है।

खाद और उर्वरक प्रबंधन (Fertilizer Management): स्वीट कॉर्न की उन्नत खेती में उर्वरकों का बहुत महत्व है। इसके लिए प्रति एकड़ में 8-10 टन गोबर की खाद डालें, जो भूमि को उपजाऊ बनाने में मदद करता है।

क्र.	रासायनिक खाद प्रति हेक्टेयर	नत्रजन (कि.ग्रा.)	फास्फोरस (कि.ग्रा.)	पोटाश (कि.ग्रा.)
1	बुवाई के समय	30	60	40
2	15 दिन बाद	35	00	00
3	30 दिन बाद	35	00	00
	कुल	100	60	40

रोग और कीट नियंत्रण :- खाद के साथ फरटेरा (डूपौंड) 4 किलो प्रति एकडं अथवा व्हर्टिको (सिंजेंटा) 2.5 किलो प्रति एकडं इस प्रमाण से एस्तेमाल करणे से 21 दिन तक रस चुसानेवाले किट से संरक्षण मिलता है.

क्र.	कीट और रोग	नियंत्रण	मात्रा प्रति ली पाणी में
1	कॉर्न ब्लाइट	साफ	02 ग्राम प्रति ली
2	लीफ ब्लाइट	कीटोशी	02 मि. ली प्रति ली
3	डाउनी मिल्ड्यू -	रिडोमिल गोल्ड	02 ग्राम प्रति ली
4	चारकोल रॉट -	रोको	02 ग्राम प्रति ली
5	रस्ट रोग-	इंडोफिल	02 ग्राम प्रति ली
6	कॉर्न बोरर	फोरटेनज़ा डुओ	06 मि. ली प्रति किग्रा (बीज उपचार)
		कोराजन	05 मि.ली. प्रति 15 ली.
7	माहू,	कॉन्फीडॉर	0.5 मि. ली प्रति ली
8	लीफ हॉपर	ॲक्टरा	06 ग्राम प्रति 15 ली
9	फॉल आर्मी वर्म	फोरटेनज़ा डुओ	06 मि. ली प्रति किग्रा (बीज उपचार)
		ट्रेसर	05 मि.ली. प्रति 15 ली.

सिंचाई प्रबंधन (Irrigation Management): स्वीट कॉर्न की खेती में सिंचाई का सही प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण है। खरीफ मौसम में यदि प्राकृतिक वर्षा पर्याप्त न हो, तो सिंचाई की आवश्यकता अनुसार की जानी चाहिए। रबी मौसम में मीठे मक्का को 4-6 बार सिंचाई की जरूरत होती है, विशेष रूप से नरमंझरी आने और दाने में दूधिया अवस्था के दौरान। सिंचाई के लिए ड्रिप इरीगेशन प्रणाली सबसे उपयुक्त है, क्योंकि इससे पानी की बचत होती है और पौधों को समान रूप से पानी मिलता है। सिंचाई के दौरान खेत में जल निकासी की व्यवस्था का ध्यान रखें, ताकि पानी जमा न हो और फसल को नुकसान न पहुंचे। भारी मिट्टी में 4-5 सिंचाई और हल्की मिट्टी में 7-8 सिंचाई की आवश्यकता होती है।

खरपतवार प्रबंधन (Weed Management): स्वीट कॉर्न की फसल में खरपतवारों का नियंत्रण बहुत जरूरी है, क्योंकि ये फसल के पोषक तत्वों का उपयोग करती हैं और फसल की वृद्धि पर असर डालती हैं। खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए खेत की नियमित सफाई और निराई-गुड़ाई करें। इसके अलावा, खरपतवार नाशक दवाओं का उपयोग से खरपतवार आसानी से नष्ट हो जाते हैं और फसल की अच्छी वृद्धि होती है।

स्वीट कॉर्न की फसल में खरपतवार का नियंत्रण-

1. स्वीट कॉर्न की फसल में खरपतवार की समस्या को नियंत्रित करने के लिए नियमित रूप से खेत की निदाई-गुड़ाई करें और खरपतवारनाशी दवाइयों का प्रयोग करें जैसे-
2. बायर लॉडिस खरपतवारनाशी (Laudis Herbicide)- लॉडिस खरपतवारनाशी टेम्बोट्रियोन 42% एससी (Tembotrione 42% SC) 150 मिली प्रति एकड़ अनुसार छिड़काव करें।

कटाई (Harvesting): स्वीट कॉर्न की कटाई का सही समय बहुत महत्वपूर्ण होता है। भुट्टे की बाहरी परत हरी और चिपचिपी हो तब कटाई करनी चाहिए। यह आमतौर पर बुवाई के 60-90 दिनों के बाद होती है।

टिपण्णी :- उपरोक्त सभी जाणकारीया हमारे अनुसंधान केंद्र पर किये गये प्रयोग पर आधारित है. भिन्न स्थानो पर भिन्न मौसम, भूमी प्रकार एवं ऋतू के कारण उपरोक्त जाणकारी मे बदलाव आ सकता है.

Markfield Hybrid Seeds Pvt. Ltd.
B-3, Additional MIDC, Chh. Sambhaji Nagar Road, Jalna, Customer Care Mobile No. 9405782668

Sweet Corn

Hybrid/Varieties:- Sweety, Sweet Heart

Soil:- Sandy loam or clay soil with good drainage is best for the cultivation of sweet corn. For this, the pH value of the soil should be 5.5 to 7.0. It can also be grown well in sandy soil, just the drainage system should be good, because water logging can affect the growth of plants.

Climate:- Hot and humid climate is good for the cultivation of sweet corn. This crop grows best in temperatures ranging from 18°C to 30°C. It requires abundant sunlight and regular rains, so that the plants can grow properly. Therefore, this crop is planted especially during monsoon and hot season.

Sowing Time: In Kharif season - from the last week of June to the first week of July.
In Rabi season - second fortnight of October.
In Zaid season - second fortnight of March.

Seed rate per acre and distance between plants-
1. The rate of seed for sweet corn cultivation is about 4-5 kg per acre.
2. For transplanting sweet corn plants, it is recommended to plant at a distance of 20-30 cm.
3. The distance between the plants is kept 60-75 cm.

Manure and Fertilizer Management: Fertilizers are very important in advanced cultivation of sweet corn. For this, add 8-10 tons of cow dung manure per acre, which helps in making the land fertile.

Sr. No.	Chemical fertilizers per hectare	Nitrogen (kg)	Phosphorus (kg)	Potash (kg)
1	At the time of sowing	30	60	40
2	After 15 days	35	00	00
3	After 30 days	35	00	00
	Total	100	60	40

Disease And Pest Control :-
Using Fertera (Dupond) 4 kg per acre or Vertico (Syngenta) 2.5 kg per acre with manure gives protection from sucking insects for 21 days.

Sr. No.	Disease/Pest	Control	Amount Per Liter Of Water
1	Corn Blight	SAAF	02 grams per liter
2	Leaf Blight	KITOSHI	02 ml. per liter
3	Downy Mildew -	RIDOMIL GOLD	02 grams per liter
4	Charcoal Rot -	ROKO	02 grams per liter
5	Rust Diseases -	INDOFIL	02 grams per liter
6	Corn Borer	FORTENZA DUO	06 ml. li per kg during (seed treatment)
		CORAZON	05 ml per 15 litres.
7	Aphid,	CONFIDOR	0.5 ml per liter
8	Leaf Hopper	ACTERRA	06 grams per 15 liters
9	Fall Army Worm	FORTENZA DUO	06 ml. li per kg during (seed treatment)
		TRACER	05 ml per 15 litres.

Irrigation Management: Proper management of irrigation is very important in sweet corn cultivation. If natural rainfall is not sufficient in Kharif season, then irrigation should be done as per requirement. Sweet corn needs 4-6 irrigations during the Rabi season, especially during the germination and milky stages of the grain. Drip irrigation system is most suitable for irrigation, as it saves water and the plants get water evenly. During irrigation, take care of the drainage system in the field, so that water does not accumulate and damage the crop. 4-5 irrigations are required in heavy soil and 7-8 irrigations in light soil.

Weed Management: Weed control is very important in sweet corn crop, as they use the nutrients of the crop and affect the growth of the crop. To control weeds, clean and weed the field regularly. Apart from this, the use of weedicide drugs destroys weeds easily and the crop grows well.

Weed control in sweet corn crop-
1. To control the weed problem in sweet corn crop, regularly hoe the field and use weedicide medicines like-
2. Bayer Laudis Herbicide- Spray Laudis Herbicide Tembotrione 42% SC 150 ml per acre.

Harvesting: The right time of harvesting sweet corn is very important. Harvesting should be done when the outer layer of the corn is green and sticky. This usually happens 60-90 days after sowing.

Note:- All the above information is based on the experiment done at our research center. The above information may change due to different weather, soil type and season at different places.

માર્કફિલ્ડ હાઇબ્રિડ સીડ્સ પ્રાઇવેટ લિમિટેડ
બી-૩, એડિશનલ એમઆઇડીસી, છઠ્ઠી સંભાજી નગર રોડ, જાલના, કસ્ટમર કેર મોબાઇલ નંબર ૯૪૦૫૭૮૨૬૬૮

મીઠા મકાઈ

હાઇબ્રિડ/જાતો:- મીઠી, મીઠી હૃદય

માટી:- સારા ડ્રેનેજવાળી રેતાળ લોમ અથવા માટીની માટી મીઠા મકાઈની ખેતી માટે શ્રેષ્ઠ છે. આ માટે, માટીનું pH મૂલ્ય ૫.૫ થી ૭.૦ હોવું જોઈએ. તે રેતાળ જમીનમાં પણ સારી રીતે ઉગાડી શકાય છે, ફક્ત ડ્રેનેજ સિસ્ટમ સારી હોવી જોઈએ, કારણ કે પાણી ભરાવાથી છોડના વિકાસ પર અસર થઈ શકે છે.

આબોહવા:- ગરમ અને ભેજવાળી આબોહવા મીઠા મકાઈની ખેતી માટે સારી છે. આ પાક ૧૮°C થી ૩૦°C તાપમાનમાં શ્રેષ્ઠ રીતે ઉગે છે. તેને પુષ્કળ સૂર્યપ્રકાશ અને નિયમિત વરસાદની જરૂર પડે છે, જેથી છોડ યોગ્ય રીતે વિકાસ કરી શકે. તેથી, આ પાક ખાસ કરીને ચોમાસા અને ગરમીની ઋતુમાં વાવવામાં આવે છે.

વાવણીનો સમય: ખરીફ ઋતુમાં - જૂનના છેલ્લા અઠવાડિયાથી જુલાઈના પહેલા અઠવાડિયા સુધી.
રવિ ઋતુમાં - ઓક્ટોબરનો બીજો પખવાડિયા.

ઝૈદ ઋતુમાં - માર્ચનો બીજો પખવાડિયા.

પ્રતિ એકર બીજનો દર અને છોડ વચ્ચેનું અંતર-
1. મીઠી મકાઈની ખેતી માટે બીજનો દર પ્રતિ એકર લગભગ 4-5 કિલો છે.
2. મીઠી મકાઈના છોડ રોપવા માટે, 20-30 સે.મી.ના અંતરે વાવેતર કરવાની ભલામણ કરવામાં આવે છે.
3. છોડ વચ્ચેનું અંતર 60-75 સે.મી. રાખવામાં આવે છે.
ખાતર અને ખાતર વ્યવસ્થાપન: મીઠી મકાઈની અદ્યતન ખેતીમાં ખાતર ખૂબ જ મહત્વપૂર્ણ છે. આ માટે, પ્રતિ એકર 8-10 ટન ગાયનું છાણ ખાતર ઉમેરો, જે જમીનને ફળદ્રુપ બનાવવામાં મદદ કરે છે.

શ્રી. સારું.	પ્રતિ હેક્ટર રાસાયણિક ખાતરો	નાઇટ્રોજન (કિલો)	ફોસ્ફરસ (કિલો)	(કિલો) પોટાશ (કિલો)
૧	વાવણી સમયે	**30**	**60**	**40**
૨	૧૫ દિવસ પછી	**35**	**00**	**00**
૩	૩૦ દિવસ પછી	**35**	**00**	**00**
	કુલ	**100**	**60**	**40**

રોગ અને જીવાત નિયંત્રણ :-
ફર્ટેરા (ડુપોન્ડ) પ્રતિ એકર 4 કિલો અથવા વર્ટીકો (સિંજેન્ટા) 2.5 કિલો પ્રતિ એકર ખાતર સાથે વાપરવાથી 21 દિવસ સુધી યૂસીયા જંતુઓથી રક્ષણ મળે છે.

શ્રી. સારું.	રોગ/જીવાત	નિયંત્રણ	પ્રતિ લિટર પાણીનું પ્રમાણ
૧	મકાઈનો સુકારો	SAAF	૦૨ ગ્રામ પ્રતિ લિટર
૨	પાનનો સુકારો	કિટોશી	૦૨ મિલી. પ્રતિ લિટર
૩	ડાઉની માઇલ્ડ્યુ -	રિડોમિલ સોનું	૦૨ ગ્રામ પ્રતિ લિટર
૪	કોલસાનો સડો -	રોકો	૦૨ ગ્રામ પ્રતિ લિટર
૫	કાટના રોગો -	ઇન્ડોનેફિલ	૦૨ ગ્રામ પ્રતિ લિટર
6	મકાઈની ઈયળ	સ્ટ્રેન્થ ડ્યુઓ	૦૬ મિલી. પ્રતિ કિલો (બીજ માવજત) દરમિયાન
		હૃદય	૦૫ મિલી પ્રતિ ૧૫ લિટર.
૭	મોલો મચ્છર,	કન્ફિડોર	૦.૫ મિલી. પ્રતિ લિટર
૪	પાનનો હૂપર	એક્ટેરા	૦૬ ગ્રામ પ્રતિ ૧૫ લિટર
૯	પાનખરમાં લશ્કરી કૃમિ	સ્ટ્રેન્થ ડ્યુઓ	૦૬ મિલી. પ્રતિ કિલો (બીજ માવજત) દરમિયાન
		ટ્રેસર	૦૫ મિલી. પ્રતિ ૧૫ લિટર.

સિંચાઇ વ્યવસ્થાપન: મીઠી મકાઈની ખેતીમાં સિંચાઈનું યોગ્ય સંચાલન ખૂબ જ મહત્વપૂર્ણ છે. જો ખરીફ ઋતુમાં કુદરતી વરસાદ પૂરતો ન હોય, તો જરૂરિયાત મુજબ સિંચાઇ કરવી જોઈએ. રવિ ઋતુ દરમિયાન, ખાસ કરીને અનાજના અંકુરણ અને દૂધિયા તબક્કા દરમિયાન, મીઠી મકાઈને 4-6 સિંચાઈની જરૂર પડે છે. ટપક સિંચાઇ પદ્ધતિ સિંચાઇ માટે સૌથી યોગ્ય છે, કારણ કે તે પાણીની બચત કરે છે અને છોડને સમાન રીતે પાણી મળે છે. સિંચાઇ દરમિયાન, ખેતરમાં ડ્રેનેજ સિસ્ટમનું ધ્યાન રાખો, જેથી પાણી એકઠું ન થાય અને પાકને નુકસાન ન થાય. ભારે જમીનમાં 4-5 સિંચાઇ અને હલકી જમીનમાં 7-8 સિંચાઇ જરૂરી છે.

નીંદણ વ્યવસ્થાપન: મીઠી મકાઈના પાકમાં નીંદણ નિયંત્રણ ખૂબ જ મહત્વપૂર્ણ છે, કારણ કે તે પાકના પોષક તત્વોનો ઉપયોગ કરે છે અને પાકના વિકાસને અસર કરે છે. નીંદણ નિયંત્રણ માટે, ખેતરને નિયમિતપણે સાફ કરો અને નીંદણ કાઢો. આ ઉપરાંત, નીંદણનાશક દવાઓનો ઉપયોગ નીંદણનો સરળતાથી નાશ કરે છે અને પાકનો સારો વિકાસ થાય છે.

મીઠી મકાઈના પાકમાં નીંદણ નિયંત્રણ-
૧. મીઠી મકાઈના પાકમાં નીંદણની સમસ્યાને નિયંત્રિત કરવા માટે, નિયમિતપણે ખેતરમાં ખોદકામ કરો અને નીંદણનાશક દવાઓનો ઉપયોગ કરો જેમ કે-
૨. બેયર લૉડિસ હર્બિસાઇડ- લૉડિસ હર્બિસાઇડ ટેમ્બોટ્રિઓન ૪૨% SC ૧૫૦ મિલી પ્રતિ એકર છંટકાવ કરો.
લણણી: મીઠી મકાઈની લણણીનો યોગ્ય સમય ખૂબ જ મહત્વપૂર્ણ છે. મકાઇનો બાહ્ય પડ લીલો અને ચીકણો હોય ત્યારે લણણી કરવી જોઈએ. આ સામાન્ય રીતે વાવણી પછી ૬૦-૯૦ દિવસ પછી થાય છે.

નોંધ:- ઉપરોક્ત બધી માહિતી અમારા સંશોધન કેન્દ્રમાં કરવામાં આવેલા પ્રયોગ પર આધારિત છે. ઉપરોક્ત માહિતી વિવિધ સ્થળોએ વિવિધ હવામાન, માટીના પ્રકાર અને ઋતુને કારણે બદલાઇ શકે છે.

మార్క్‌ఫీల్డ్ హైబ్రిడ్ సీడ్స్ ప్రైవేట్ లిమిటెడ్. లిమిటెడ్.
B-3, అదనపు ఇండస్ట్రియల్ ఎస్టేట్, జల్నా, కస్టమర్ కేర్ మొహమ్మద్. నం. 9405782668

తీపి మొక్కజొన్న

రకాలు:- స్వీటీ, స్వీట్ హార్ట్

నేల: :- మంచి నీటి పారుదల సౌకర్యం ఉన్న ఇసుక లోవామ్ లేదా బంకమట్టి నేల తీపి మొక్కజొన్న సాగుకు ఉత్తమం. దీని కోసం, నేల యొక్క pH విలువ 5.5 నుండి 7.0 మధ్య ఉండాలి. నీరు నిలిచిపోవడం మొక్కల పెరుగుదలను ప్రభావితం చేస్తుంది కాబట్టి సరైన డ్రైనేజీ వ్యవస్థ ఉంటే ఇసుక నేలలో కూడా దీనిని బాగా పెంచవచ్చు.

వాతావరణం:- తీపి మొక్కజొన్న సాగుకు వెచ్చని మరియు తేమతో కూడిన వాతావరణం మంచిది. ఈ పంట 18°C నుండి 30°C వరకు ఉష్ణోగ్రతలలో బాగా పెరుగుతుంది. మొక్కల సరైన పెరుగుదలకు సమృద్ధిగా సూర్యరశ్మి మరియు క్రమం తప్పకుండా వర్షపాతం అవసరం. అందువల్ల, ఈ పంటను ముఖ్యంగా వర్షాకాలం మరియు వేడి కాలంలో పండిస్తారు.

విత్తే సమయం: ఖరీఫ్ సీజన్‌లో - జూన్ చివరి వారం నుండి జూలై మొదటి వారం వరకు.
రబీ సీజన్‌లో - అక్టోబర్ రెండవ పక్షం రోజులు. జైద్ సీజన్‌లో - మార్చి రెండవ పక్షం.
ఎకరానికి విత్తన రేటు మరియు మొక్కల అంతరం-
1. తీపి మొక్కజొన్న సాగుకు విత్తన రేటు ఎకరానికి దాదాపు 4-5 కిలోలు.
2. తీపి మొక్కజొన్న మొక్కలను నాటడానికి, 20-30 సెం.మీ దూరంలో నాటాలని సిఫార్సు చేయబడింది.
3. మొక్కల మధ్య దూరం 60-75 సెంటీమీటర్లు ఉంచబడుతుంది.

ఎరువుల నిర్వహణ: తీపి మొక్కజొన్న యొక్క అధునాతన సాగులో ఎరువులు చాలా ముఖ్యమైనవి. దీని కోసం, ఎకరానికి 8-10 టన్నుల ఆవు పేడ ఎరువును వేయండి, ఇది భూమిని సారవంతం చేయడంలో సహాయపడుతుంది.

లేదు.	హెక్టారుకు రసాయన ఎరువులు	నత్రజని (కిలోలు)	భాస్వరం (కిలోలు)	పొటాష్ (కిలోలు)
1. 1.	విత్తే సమయంలో	30	60	40
2	15 రోజుల తర్వాత	35	00	00
3	30 రోజుల తర్వాత	35	00	00
లేదు.	మొత్తం	100	60	40

వ్యాధి మరియు తెగులు నియంత్రణ రసాయన ఔషధ మోతాదు మరియు సమయం:-
ఎకరానికి 4 కిలోల ఫెర్టెరా (డూపాండ్) లేదా ఎకరానికి 2.5 కిలోల వెర్టికో (సింజెంటా) ఎరువులతో కలిపి వాడటం వల్ల 21 రోజుల పాటు రసం పీల్చే కీటకాల నుండి రక్షణ లభిస్తుంది.

జ. లేదు.	వ్యాధులు/ తెగుళ్ళు	నియంత్రణ	లీటరు నీటి పరిమాణం
1. 1.	మొక్కజొన్న ఎండు తెగులు	శుభ్రంగా	లీటరుకు 02 గ్రాములు
2	ఆకు మాడు తెగులు	కీతోషి	02 నిమి. లీ పర్ లీ
3	డౌనీ బూజు తెగులు -	రిడోమిల్ గోల్డ్	లీటరుకు 02 గ్రాములు
4	బొగ్గు తెగులు -	ఆపు	లీటరుకు 02 గ్రాములు
5	తుప్పు వ్యాధి-	ఇండోఫిల్	లీటరుకు 02 గ్రాములు
6	మొక్కజొన్న తొలుచు పురుగులు	ఫోర్టెన్జా డుయో	06 నిమి. కిలోకు లీటరు (విత్తన శుద్ధి)
		కొరజోన్	15 లీటర్లకు 05 మి.లీ.
7	మహు,	కాన్ఫిడర్	0.5 నిమి. లీ పర్ లీ
8	ఆకు హాప్పర్	యాక్టోరా	15 లీటర్లకు 06 గ్రాములు
9	ఫాల్ ఆర్మీ వార్మ్	ఫోర్టెన్జా డుయో	06 నిమి. కిలోకు లీటరు (విత్తన శుద్ధి)
		ట్రేసర్	15 లీటర్లకు 05 మి.లీ.

నీటిపారుదల నిర్వహణ: తీపి మొక్కజొన్న సాగులో సరైన నీటిపారుదల నిర్వహణ చాలా ముఖ్యం. ఖరీఫ్ సీజన్‌లో సహజ వర్షపాతం సరిపోకపోతే, అవసరాన్ని బట్టి నీటిపారుదల చేయాలి. రబీ సీజన్‌లో తీపి మొక్కజొన్నకు 4-6 సార్లు నీరు పెట్టడం అవసరం, ముఖ్యంగా గింజ అభివృద్ధి మరియు ధాన్యం పాల దశలో. బిందు సేద్యం వ్యవస్థ నీటిపారుదలకు అత్యంత అనుకూలమైనది, ఎందుకంటే ఇది నీటిని ఆదా చేస్తుంది మరియు మొక్కలకు సమానంగా నీటిని అందిస్తుంది. నీటిపారుదల సమయంలో, పొలంలో డ్రైనేజీ వ్యవస్థను జాగ్రత్తగా చూసుకోండి, తద్వారా నీరు నిల్వ ఉండకుండా మరియు పంట దెబ్బతినకుండా ఉండండి. బరువైన నేలకు 4-5 సార్లు మరియు తేలికైన నేలకు 7-8 సార్లు నీరు పెట్టాలి.

కలుపు నిర్వహణ: తీపి మొక్కజొన్న పంటలో కలుపు నియంత్రణ చాలా ముఖ్యం ఎందుకంటే అవి పంట పోషకాలను వినియోగించుకుంటాయి మరియు పంట పెరుగుదలను ప్రభావితం చేస్తాయి. కలుపు మొక్కలను నియంత్రించడానికి, పొలాన్ని క్రమం తప్పకుండా శుభ్రం చేసి కలుపు తీయండి. దీనితో పాటు, కలుపు మందుల వాడకంతో, కలుపు మొక్కలు సులభంగా నాశనం అవుతాయి మరియు పంట బాగా పెరుగుతుంది.

తీపి మొక్కజొన్న పంటలో కలుపు నియంత్రణ-
1. తీపి మొక్కజొన్న పంటలో కలుపు సమస్యను నియంత్రించడానికి పొలంలో క్రమం తప్పకుండా కలుపు తీయడం ముఖ్యం.
గొయ్యి కోయండి మరియు కలుపు మందులను వాడండి-
2. బేయర్ లాడిస్ హెర్బిసైడ్ - లాడిస్ హెర్బిసైడ్ టెంబోట్రియాన్ 42% SC
ఎకరానికి 150 మి.లీ చొప్పున (టెంబోట్రియోన్ 42% SC) పిచికారీ చేయాలి.

పంట కోత: తీపి మొక్కజొన్న కోతకు సరైన సమయం చాలా ముఖ్యం. మొక్కజొన్న బయటి పొర ఆకుపచ్చగా మరియు జిగటగా ఉన్నప్పుడు దానిని కోయాలి. ఇది సాధారణంగా విత్తిన 60-90 రోజుల తర్వాత జరుగుతుంది.

గమనిక:- పైన పేర్కొన్న సమాచారమంతా మా పరిశోధన కేంద్రంలో నిర్వహించిన ప్రయోగాల ఆధారంగా ఇవ్వబడింది. పైన పేర్కొన్న సమాచారం వేర్వేరు ప్రదేశాలలో వేర్వేరు వాతావరణం, నేల రకం మరియు రుతువుల కారణంగా మారవచ్చు.

ಮಾರ್ಕ್‌ಫೀಲ್ಡ್ ಹೈಬ್ರಿಡ್ ಸೀಡ್ಸ್ ಪ್ರೈ.ಲಿ. ಲಿಮಿಟೆಡ್.
ಬಿ-3, ಹೆಚ್ಚುವರಿ ಕೈಗಾರಿಕಾ ಎಸ್ಟೇಟ್, ಜಲ್ನಾ, ಕಸ್ಟಮರ್ ಕೇರ್ ದೂರವಾಣಿ ಸಂಖ್ಯೆ 9405782668
ಆರಿಸಿ:- ಸಿಹಿ ಜೋಳ

ಪ್ರಭೇದಗಳು:- ಸ್ವೀಟಿ, ಸ್ವೀಟ್ ಹಾರ್ಟ್

ಮಣ್ಣು:- ಸಿಹಿ ಜೋಳದ ಕೃಷಿಗೆ ಮರಳು ಮಿಶ್ರಿತ ಗೋಡು ಅಥವಾ ಉತ್ತಮ ಒಳಚರಂಡಿ ಹೊಂದಿರುವ ಜೇಡಿಮಣ್ಣು ಉತ್ತಮ. ಇದಕ್ಕಾಗಿ, ಮಣ್ಣಿನ pH ಮೌಲ್ಯವು 5.5 ರಿಂದ 7.0 ರ ನಡುವೆ ಇರಬೇಕು. ನೀರು ನಿಂತರೆ ಸಸ್ಯಗಳ ಬೆಳವಣಿಗೆಯ ಮೇಲೆ ಪರಿಣಾಮ ಬೀರುವುದರಿಂದ ಸರಿಯಾದ ಒಳಚರಂಡಿ ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಇದ್ದರೆ ಮರಳು ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿಯೂ ಸಹ ಇದನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆಯಬಹುದು.

ಹವಾಮಾನ:- ಸಿಹಿ ಜೋಳದ ಕೃಷಿಗೆ ಬೆಚ್ಚಗಿನ ಮತ್ತು ಆರ್ದ್ರ ವಾತಾವರಣ ಒಳ್ಳೆಯದು. ಈ ಬೆಳೆ 18°C ನಿಂದ 30°C ವರೆಗಿನ ತಾಪಮಾನದಲ್ಲಿ ಉತ್ತಮವಾಗಿ ಬೆಳೆಯುತ್ತದೆ. ಸಸ್ಯಗಳ ಸರಿಯಾದ ಬೆಳವಣಿಗೆಗೆ ಹೇರಳವಾದ ಸೂರ್ಯನ ಬೆಳಕು ಮತ್ತು ನಿಯಮಿತ ಮಳೆಯ ಅಗತ್ಯವಿರುತ್ತದೆ. ಆದ್ದರಿಂದ, ಈ ಬೆಳೆಯನ್ನು ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಮಳೆಗಾಲ ಮತ್ತು ಬೇಸಿಗೆಯ ಋತುವಿನಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯಲಾಗುತ್ತದೆ.

ಬಿತ್ತನೆ ಸಮಯ: ಖಾರಿಫ್ ಋತುವಿನಲ್ಲಿ - ಜೂನ್ ಕೊನೆಯ ವಾರದಿಂದ ಜುಲೈ ಮೊದಲ ವಾರದವರೆಗೆ.
ರಬಿ ಋತುವಿನಲ್ಲಿ - ಅಕ್ಟೋಬರ್ ತಿಂಗಳ ಎರಡನೇ ಹದಿನೈದು ದಿನಗಳು. ಝೈದ್ ಋತುವಿನಲ್ಲಿ - ಮಾರ್ಚ್ ತಿಂಗಳ ಎರಡನೇ ಹದಿನೈದು ವಾರಗಳು.
ಎಕರೆಗೆ ಬೀಜದ ದರ ಮತ್ತು ಸಸ್ಯಗಳ ನಡುವಿನ ಅಂತರ-
1. ಸಿಹಿ ಜೋಳದ ಕೃಷಿಗೆ ಬೀಜದ ದರ ಎಕರೆಗೆ ಸುಮಾರು 4-5 ಕೆ.ಜಿ.
2. ಸಿಹಿ ಜೋಳದ ಗಿಡಗಳನ್ನು ನಾಟಿ ಮಾಡಲು, 20-30 ಸೆಂ.ಮೀ ದೂರದಲ್ಲಿ ನೆಡಲು ಸೂಚಿಸಲಾಗುತ್ತದೆ.
3. ಸಸ್ಯಗಳ ನಡುವಿನ ಅಂತರವನ್ನು 60-75 ಸೆಂಟಿಮೀಟರ್‌ಗಳಲ್ಲಿ ಇಡಲಾಗುತ್ತದೆ.

ರಸಗೊಬ್ಬರ ನಿರ್ವಹಣೆ: ಸಿಹಿ ಜೋಳದ ಮುಂದುವರಿದ ಕೃಷಿಯಲ್ಲಿ ರಸಗೊಬ್ಬರಗಳು ಬಹಳ ಮುಖ್ಯ. ಇದಕ್ಕಾಗಿ, ಎಕರೆಗೆ 8-10 ಟನ್ ಹಸುವಿನ ಸಗಣಿ ಗೊಬ್ಬರವನ್ನು ಸೇರಿಸಿ, ಇದು ಭೂಮಿಯನ್ನು ಫಲವತ್ತಾಗಿಸಲು ಸಹಾಯ ಮಾಡುತ್ತದೆ.

ಕ್ರಮ ಸಂಖ್ಯೆ	ಪ್ರತಿ ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ಗೆ ರಾಸಾಯನಿಕ ಗೊಬ್ಬರಗಳು	ಸಾರಜನಕ (ಕೆಜಿ)	ರಂಜಕ (ಕೆಜಿ)	ಪೊಟ್ಯಾಶ್ (ಕೆಜಿ)
1	ಬಿತ್ತನೆ ಸಮಯದಲ್ಲಿ	30	60	40
2	15 ದಿನಗಳ ನಂತರ	35	00	00
3	30 ದಿನಗಳ ನಂತರ	35	00	00
	ಒಟ್ಟು	100	60	40

ರೋಗ ಮತ್ತು ಕೀಟ ನಿಯಂತ್ರಣ ರಾಸಾಯನಿಕ ಔಷಧದ ಪ್ರಮಾಣ ಮತ್ತು ಸಮಯ:-
ಎಕರೆಗೆ 4 ಕೆಜಿ ಫರ್ಟೆರಾ (ಡುಪಾಂಡ್) ಅಥವಾ 2.5 ಕೆಜಿ ವರ್ಟಿಕೊ (ಸಿಂಜೆಂಟಾ) ಅನ್ನು ಗೊಬ್ಬರದೊಂದಿಗೆ ಬಳಸುವುದರಿಂದ 21 ದಿನಗಳವರೆಗೆ ರಸ ಹೀರುವ ಕೀಟಗಳಿಂದ ರಕ್ಷಣೆ ಸಿಗುತ್ತದೆ.

ಕ್ರಮ ಸಂಖ್ಯೆ	ರೋಗ/ಕೀಟ	ಔಷಧದ ಹೆಸರು	ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್ ನೀರಿಗೆ ಪ್ರಮಾಣ
1	ಜೋಳದ ಬ್ಲೈಟ್	ಸ್ವಚ್ಛ	02 ಗ್ರಾಂ ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ
2	ಕೆಟಿಎಸ್‌ಎಚ್	ಕೀಟೋಶಿ	02 ನಿಮಿಷ. ಲೀ ಪರ್ ಲೀ
3	ಡೌನಿ ಶಿಲೀಂಧ್ರ	ರಿಡೋಮಿಲ್ ಗೋಲ್ಡ್	ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 02 ಗ್ರಾಂ
4	ಇದ್ದಿಲು ಕೊಳೆತ -	ನಿಲ್ಲಿಸಿ	ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 02 ಗ್ರಾಂ
5	ತುಕ್ಕು ರೋಗ-	ಇಂಡೋಫಿಲ್	ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 02 ಗ್ರಾಂ
6	ಜೋಳ ಕೊರಕ	ಫ್ಲೋರ್ಟೆಂಜಾ ಡ್ಯುವೋ	06 ನಿಮಿಷ. ಪ್ರತಿ ಕೆಜಿಗೆ ಲೀ ಬೀಜ ಸಂಸ್ಕರಣೆ
		ಕೊರಾಜನ್	15 ಲೀಟರ್‌ಗೆ 05 ಮಿಲಿ.
7	ಮಾಹು	ಕಾನ್ಫಿಡರ್	0.5 ನಿಮಿಷ. ಲೀ ಪರ್ ಲೀ
8	ಮನುಷ್ಯ,	ಆಕ್ಟಾ	15 ಲೀಟರ್‌ಗೆ 06 ಗ್ರಾಂ
9	ಫಾಲ್ ಆರ್ಮಿ ವರ್ಮ್	ಫ್ಲೋರ್ಟೆಂಜಾ ಡ್ಯುವೋ	06 ನಿಮಿಷ. ಪ್ರತಿ ಕೆಜಿಗೆ ಲೀ ಬೀಜ ಸಂಸ್ಕರಣೆ
		ಟ್ರೇಸರ್	15 ಲೀಟರ್‌ಗೆ 05 ಮಿ.ಲೀ..

ನೀರಾವರಿ ನಿರ್ವಹಣೆ: ಸಿಹಿ ಜೋಳದ ಕೃಷಿಯಲ್ಲಿ ಸರಿಯಾದ ನೀರಾವರಿ ನಿರ್ವಹಣೆ ಬಹಳ ಮುಖ್ಯ. ಖಾರಿಫ್ ಋತುವಿನಲ್ಲಿ ನೈಸರ್ಗಿಕ ಮಳೆ ಸಾಕಾಗದಿದ್ದರೆ, ಅವಶ್ಯಕತೆಗೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ ನೀರಾವರಿ ಮಾಡಬೇಕು. ರಬಿ ಋತುವಿನಲ್ಲಿ ಸಿಹಿ ಜೋಳಕ್ಕೆ 4-6 ಬಾರಿ ನೀರಾವರಿ ಅಗತ್ಯವಿರುತ್ತದೆ, ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಕಾಳುಗಳ ಬೆಳವಣಿಗೆ ಮತ್ತು ಧಾನ್ಯದ ಹಾಲಿನ ಹಂತದಲ್ಲಿ. ಹನಿ ನೀರಾವರಿ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯು ನೀರಾವರಿಗೆ ಹೆಚ್ಚು ಸೂಕ್ತವಾಗಿದೆ, ಏಕೆಂದರೆ ಇದು ನೀರನ್ನು ಉಳಿಸುತ್ತದೆ ಮತ್ತು ಸಸ್ಯಗಳಿಗೆ ಸಮವಾಗಿ ನೀರನ್ನು ಒದಗಿಸುತ್ತದೆ. ನೀರಾವರಿ ಸಮಯದಲ್ಲಿ, ಹೊಲದಲ್ಲಿ ಒಳಚರಂಡಿ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನು ನೋಡಿಕೊಳ್ಳಿ, ಇದರಿಂದ ನೀರು ಸಂಗ್ರಹವಾಗದಂತೆ ಮತ್ತು ಬೆಳೆಗೆ ಹಾನಿಯಾಗದಂತೆ ನೋಡಿಕೊಳ್ಳಿ. ಭಾರವಾದ ಮಣ್ಣಿಗೆ 4-5 ಬಾರಿ ಮತ್ತು ಹಗುರವಾದ ಮಣ್ಣಿಗೆ 7-8 ಬಾರಿ ನೀರಾವರಿ ಅಗತ್ಯವಿದೆ.

ಕಳೆ ನಿರ್ವಹಣೆ: ಸಿಹಿ ಜೋಳದ ಬೆಳೆಯಲ್ಲಿ ಕಳೆ ನಿಯಂತ್ರಣ ಬಹಳ ಮುಖ್ಯ ಏಕೆಂದರೆ ಅವು ಬೆಳೆ ಪೋಷಕಾಂಶಗಳನ್ನು ಬಳಸುತ್ತವೆ ಮತ್ತು ಬೆಳೆ ಬೆಳವಣಿಗೆಯ ಮೇಲೆ ಪರಿಣಾಮ ಬೀರುತ್ತವೆ. ಕಳೆಗಳನ್ನು ನಿಯಂತ್ರಿಸಲು, ನಿಯಮಿತವಾಗಿ ಹೊಲವನ್ನು ಸ್ವಚ್ಛಗೊಳಿಸಿ ಮತ್ತು ಕಳೆ ತೆಗೆಯಿರಿ. ಇದಲ್ಲದೆ, ಕಳೆನಾಶಕಗಳ ಬಳಕೆಯಿಂದ, ಕಳೆಗಳು ಸುಲಭವಾಗಿ ನಾಶವಾಗುತ್ತವೆ ಮತ್ತು ಬೆಳೆ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆಯುತ್ತದೆ.

ಸಿಹಿ ಜೋಳದ ಬೆಳೆಯಲ್ಲಿ ಕಳೆ ನಿಯಂತ್ರಣ-
1. ಸಿಹಿ ಜೋಳದ ಬೆಳೆಯಲ್ಲಿ ಕಳೆ ಸಮಸ್ಯೆಯನ್ನು ನಿಯಂತ್ರಿಸಲು ಹೊಲದಲ್ಲಿ ನಿಯಮಿತವಾಗಿ ಕಳೆ ತೆಗೆಯುವುದು ಮುಖ್ಯ.
ಹೂಳು ತೆಗೆಯಿರಿ ಮತ್ತು ಕಳೆನಾಶಕಗಳನ್ನು ಬಳಸಿ, ಉದಾಹರಣೆಗೆ-
2. ಬೇಯರ್ ಲಾಡಿಸ್ ಸಸ್ಯನಾಶಕ - ಲಾಡಿಸ್ ಸಸ್ಯನಾಶಕ ಟೆಂಬೊಟ್ರಿಯಾನ್ 42% SC
(ಟೆಂಬೊಟ್ರಿಯೋನ್ 42% SC) ಪ್ರತಿ ಎಕರೆಗೆ 150 ಮಿಲಿ ದರದಲ್ಲಿ ಸಿಂಪಡಿಸಿ.

ಕೊಯ್ಲು: ಸಿಹಿ ಜೋಳವನ್ನು ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಲು ಸರಿಯಾದ ಸಮಯ ಬಹಳ ಮುಖ್ಯ. ಜೋಳದ ಹೊರ ಪದರವು ಹಸಿರು ಮತ್ತು ಜಿಗುಟಾದಾಗ ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಬೇಕು. ಇದು ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಿದ 60-90 ದಿನಗಳ ನಂತರ ಸಂಭವಿಸುತ್ತದೆ.

ಗಮನಿಸಿ:- ಮೇಲಿನ ಎಲ್ಲಾ ಮಾಹಿತಿಯು ನಮ್ಮ ಸಂಶೋಧನಾ ಕೇಂದ್ರದಲ್ಲಿ ನಡೆಸಿದ ಪ್ರಯೋಗಗಳನ್ನು ಆಧರಿಸಿದೆ. ಮೇಲಿನ ಮಾಹಿತಿಯು ವಿವಿಧ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿನ ಹವಾಮಾನ, ಮಣ್ಣಿನ ಪ್ರಕಾರ ಮತ್ತು ಋತುಮಾನಗಳಿಂದಾಗಿ ಬದಲಾಗಬಹುದು.

মার্কফিল্ড হাইব্রিড ছিডছ্ প্রাইভেট লিমিটেড। লিমিটেড।
বি-৩, অতিৰিক্ত ঔদ্যোগিক বাগিচা, জালনা, গ্রাহক সেৱা ম. নং ৯৪০৫৭৮২৬৬৮

মিঠা কুঁহিয়াৰ

জাত:- মিঠা, মিঠা হৃদয়

মাটি: :- মিঠা কুঁহিয়াৰ খেতিৰ বাবে ভাল পানী নিষ্কাশন থকা বালিচহীয়া লোম বা মাটিৰ মাটি উত্তম। ইয়াৰ বাবে মাটিৰ পি এইচ মান ৫.৫ৰ পৰা ৭.০ৰ ভিতৰত হ ’ব লাগে। বালিচহীয়া মাটিতো ইয়াক ভালদৰে খেতি কৰিব পাৰি, যদিহে সঠিক নিষ্কাশন ব্যৱস্থা থাকে কাৰণ পানী স্থবিৰ হৈ গছৰ বৃদ্ধিত প্রভাৱ পেলাব পাৰে।

জলবায়ু:- উষ্ণ আৰু আৰ্দ্র জলবায়ু মিঠা কুঁহিয়াৰ খেতিৰ বাবে ভাল। ১৮ ডিগ্রী চেলছিয়াছৰ পৰা ৩০ ডিগ্রী চেলছিয়াছলৈকে উষ্ণতাত এই শস্যৰ বৃদ্ধি সর্বোত্তম হয়। ইয়াৰ বাবে গছ-গছনিৰ সঠিক বৃদ্ধিৰ বাবে প্রচুৰ সূর্যৰ পোহৰ আৰু নিয়মিত বৰষুণৰ প্রয়োজন। সেয়েহে এই শস্য বিশেষকৈ বাৰিষা আৰু গৰমৰ দিনত খেতি কৰা হয়।

বীজ সিঁচাৰ সময়: খাৰিফ বতৰত – জুন মাহৰ শেষ সপ্তাহৰ পৰা জুলাই মাহৰ প্রথম সপ্তাহলৈকে।
ৰবি বতৰত – অক্টোবৰৰ দ্বিতীয় পখেক। জাইদ বতৰত – মার্চ মাহৰ দ্বিতীয় পখেক।
প্রতি একৰত বীজৰ হাৰ আৰু উদ্ভিদৰ ব্যৱধান-
১) মিঠা কুঁহিয়াৰ খেতিৰ বাবে বীজৰ হাৰ প্রতি একৰত প্রায় ৪-৫ কিলোগ্রাম।
২) মিঠা কুঁহিয়াৰৰ গছ ৰোপণৰ বাবে ২০-৩০ চে.মি. দূৰত্বত ৰোপণ কৰাটো বাঞ্ছনীয়।
৩) উদ্ভিদৰ মাজৰ দূৰত্ব ৬০-৭৫ চেণ্টিমিটাৰ ৰখা হয়।

সাৰ ব্যৱস্থাপনাঃ মিঠা কুঁহিয়াৰৰ উন্নত খেতিৰ ক্ষেত্রত সাৰ অতি গুৰুত্বপূর্ণ। ইয়াৰ বাবে প্রতি একৰত ৮-১০ টন গৰুৰ গোবৰ দিব লাগে, যাৰ ফলত মাটি উর্বৰ হোৱাত সহায় হয়।

ক্রমিক নম্বৰ	প্রতি হেক্টৰত ৰাসায়নিক সাৰ	নাইট্রজেন (কিলোগ্রাম)	ফছফৰাছ (কিলোগ্রাম)	পটাছ (কিলোগ্রাম)
1	বীজ সিঁচাৰ সময়ত	30	60	40
2	১৫ দিনৰ পিছত	35	00	00
3	৩০ দিনৰ পিছত	35	00	00
	মুঠ	100	60	40

ৰোগ আৰু কীট-পতংগ নিয়ন্ত্রণ ৰাসায়নিক ঔষধৰ মাত্রা আৰু সময়:-
সাৰৰ সৈতে প্রতি একৰত ৪ কিলোগ্রাম ফেৰটেৰা (ডুপণ্ড) বা ভাটিকো (চিঞ্জেন্টা) ২.৫ কেজি প্রতি একৰ ব্যৱহাৰ কৰিলে ২১ দিনলৈ ৰস চুহি খোৱা পোক-পৰুৱাৰ পৰা সুৰক্ষা পোৱা যায়।

ক্রমিক নম্বৰ	ৰোগ/কীট-পতংগ	নিয়ন্ত্রণ	প্রতি লিটাৰ পানীত পৰিমাণ
1	কর্ণ ব্লাইট	পৰিষ্কাৰ	প্রতি লিটাৰত ০২ গ্রাম
2	পাতৰ ব্লাইট	কিটোছি	০২ মিনিট। লি প্রতি লি
3	Downy Mildew - গেস্টবুক	ৰিডোমিল গোল্ড	প্রতি লিটাৰত ০২ গ্রাম
4	কাঠকয়লা পচা -	ৰ’ব	প্রতি লিটাৰত ০২ গ্রাম
5	মৰিছা ৰোগ-	ইণ্ডোফিল	প্রতি লিটাৰত ০২ গ্রাম
6	কর্ণ বৰাৰ	ফর্টেন্জা ডুঅ'	০৬ মিনিট। লিটাৰ প্রতি কিলোগ্রাম(বীজ শোধন)
		কোৰাজন	০৫ মিলিলিটাৰ প্রতি ১৫ লিটাৰত।
7	মাহু,	কনফিডৰ	০.৫ মিনিট। লি প্রতি লি
8	লিফ হপাৰ	অভিনেতা	১৫ লিটাৰত ০৬ গ্রাম
9	পতন আর্মি কৃমি	ফর্টেন্জা ডুঅ'	০৬ মিনিট। লিটাৰ প্রতি কিলোগ্রাম(বীজ শোধন)
		ট্রেচাৰ	০৫ মিলিলিটাৰ প্রতি ১৫ লিটাৰত।

জলসিঞ্চন ব্যৱস্থাপনাঃ মিঠা কুঁহিয়াৰ খেতিৰ ক্ষেত্রত জলসিঞ্চনৰ সঠিক ব্যৱস্থাপনা অতি গুৰুত্বপূর্ণ। যদি খাৰিফ বতৰত প্রাকৃতিক বৰষুণ পর্যাপ্ত নহয়, তেন্তে প্রয়োজন অনুসৰি জলসিঞ্চন কৰিব লাগে। মিঠা কুঁহিয়াৰত ৰবি বতৰত বিশেষকৈ গুটিৰ বিকাশ আৰু শস্যৰ গাথীৰৰ দৰে অৱস্থাত ৪-৬টা জলসিঞ্চনৰ প্রয়োজন হয়। জলসিঞ্চনৰ বাবে ড্রিপ জলসিঞ্চন ব্যৱস্থা আটাইতকৈ উপযোগী, কিয়নো ই পানী ৰাহি কৰে আৰু গছ-গছনিবোৰক সমানে পানী যোগান ধৰে। জলসিঞ্চনৰ সময়ত পথাৰত পানী নিষ্কাশন ব্যৱস্থাৰ যত্ন লওক, যাতে পানী জমা নহয় আৰু শস্যৰ কোনো ক্ষতি নহয়। গধুৰ মাটিত ৪-৫টা জলসিঞ্চনৰ প্রয়োজন হয় আৰু লঘু মাটিত ৭-৮টা জলসিঞ্চনৰ প্রয়োজন হয়।

অপতৃণ ব্যৱস্থাপনা: মিঠা কুঁহিয়াৰৰ শস্যত অপতৃণ নিয়ন্ত্রণ অতি গুৰুত্বপূর্ণ কাৰণ ই শস্যৰ পুষ্টিকৰ উপাদান ব্যৱহাৰ কৰি শস্যৰ বৃদ্ধিত প্রভাৱ পেলায়। অপতৃণ নিয়ন্ত্রণ কৰিবলৈ পথাৰখন নিয়মিতভাৱে পৰিষ্কাৰ কৰি অপতৃণ কৰা উচিত। ইয়াৰ বাহিৰেও অপতৃণনাশক দ্রব্যৰ ব্যৱহাৰৰ ফলত অপতৃণবোৰ সহজে ধ্বংস হৈ যায় আৰু শস্য ভালদৰে বাঢ়ে।

মিঠা কুঁহিয়াৰৰ শস্যত অপতৃণ নিয়ন্ত্রণ-
১) মিঠা কুঁহিয়াৰ খেতিৰ অপতৃণৰ সমস্যা নিয়ন্ত্রণৰ বাবে পথাৰত নিয়মীয়াকৈ অপতৃণ কৰা হয়-
কোদাল কৰা আৰু অপতৃণনাশক যেনে-
২) বেয়াৰ লাউডিছ্ হার্বিচাইড - লাউডিছ্ হার্বিচাইড টেম্বট্রিয়ান ৪২% এছ চি
প্রতি একৰত ১৫০ মিলিলিটাৰ হাৰত (Tembotrione 42% SC) স্প্রে কৰিব লাগে।

চপোৱা: মিঠা কুঁহিয়াৰ চপোৱাৰ উপযুক্ত সময় অতি গুৰুত্বপূর্ণ। কুঁহিয়াৰৰ বাহিৰৰ তৰপটো সেউজীয়া আৰু আঠাযুক্ত হ’লে চপাব লাগে। সাধাৰণতে বীজ সিঁচাৰ ৬০-৯০ দিনৰ পিছত এনে হয়।

বি:দ্র:- ওপৰৰ সকলো তথ্য আমাৰ গৱেষণা কেন্দ্রত কৰা পৰীক্ষাৰ ভিত্তিত কৰা হৈছে। বিভিন্ন স্থানত বিভিন্ন জলবায়ু, ভূমিৰ প্রকাৰ আৰু ঋতুৰ বাবে ওপৰৰ তথ্যসমূহ ভিন্ন হ’ব পাৰে।

মার্কফিল্ড হাইব্রিড সিডস প্রাইভেট লিমিটেড। লিমিটেড
বি-৩, অতিরিক্ত শিল্প এস্টেট, জালনা, কাস্টমার কেয়ার মোহাম্মদ। নং ৯৪০৫৭৮২৬৬৮

মিষ্টি ভুট্টা

জাত:- সুইটি, সুইট হার্ট

মাটি: :- ভালো নিষ্কাশন ব্যবস্থা সহ বেলে দোআঁশ বা এঁটেল মাটি মিষ্টি ভুট্টা চাষের জন্য সবচেয়ে ভালো। এর জন্য মাটির pH মান ৫.৫ থেকে ৭.০ এর মধ্যে হওয়া উচিত। বালুকাময় মাটিতেও এটি ভালোভাবে জন্মানো যায়, যদি সঠিক নিষ্কাশন ব্যবস্থা থাকে কারণ জল জমে থাকা গাছের বৃদ্ধিকে প্রভাবিত করতে পারে।

জলবায়ু:- উষ্ণ ও আর্দ্র জলবায়ু মিষ্টি ভুট্টা চাষের জন্য ভালো। এই ফসল ১৮°C থেকে ৩০°C তাপমাত্রায় সবচেয়ে ভালো জন্মে। গাছের সঠিক বৃদ্ধির জন্য প্রচুর সূর্যালোক এবং নিয়মিত বৃষ্টিপাত প্রয়োজন। অতএব, এই ফসলটি বিশেষ করে বর্ষা এবং গরম ঋতুতে জন্মানো হয়।

বপনের সময়: খরিফ মৌসুমে - জুনের শেষ সপ্তাহ থেকে জুলাইয়ের প্রথম সপ্তাহ পর্যন্ত।
রবি মৌসুমে - অক্টোবরের দ্বিতীয় পক্ষ। জায়েদ মৌসুমে - মার্চের দ্বিতীয় পক্ষকাল।
প্রতি একরে বীজের হার এবং গাছের ব্যবধান-
১. মিষ্টি ভুট্টা চাষের জন্য বীজের হার প্রতি একরে প্রায় ৪-৫ কেজি।
২. মিষ্টি ভুট্টার চারা রোপণের জন্য, ২০-৩০ সেমি দূরত্বে রোপণ করার পরামর্শ দেওয়া হয়।
৩. গাছপালার মধ্যে দূরত্ব ৬০-৭৫ সেন্টিমিটার রাখা হয়।

সার ব্যবস্থাপনা: মিষ্টি ভুট্টার উন্নত চাষে সার অত্যন্ত গুরুত্বপূর্ণ। এর জন্য, প্রতি একরে ৮-১০ টন গোবর সার যোগ করুন, যা জমিকে উর্বর করতে সাহায্য করে।

ক্রমিক সংখ্যা	প্রতি হেক্টরে রাসায়নিক সার	নাইট্রোজেন (কেজি)	ফসফরাস (কেজি)	পটাশ (কেজি)
1	বপনের সময়	30	60	40
2	১৫ দিন পর	35	00	00
3	৩০ দিন পর	35	00	00
	মোট	100	60	40

রোগ ও পোকামাকড় নিয়ন্ত্রণ রাসায়নিক ওষুধের মাত্রা এবং সময়:-
প্রতি একরে ফারটেরা (ডুপন্ড) ৪ কেজি অথবা প্রতি একরে ভার্টিকো (সিনজেন্টা) ২.৫ কেজি সারের সাথে ব্যবহার করলে ২১ দিনের জন্য রস চুষে নেওয়া পোকামাকড় থেকে সুরক্ষা পাওয়া যায়।

ক্রমিক সংখ্যা	রোগ/পোকামাকড়	নিয়ন্ত্রণ	প্রতি লিটার পানিতে পরিমাণ
1	ভুট্টার ঝলসানো রোগ	পরিষ্কার	০২ গ্রাম প্রতি লিটার
2	পাতার ঝলসানো রোগ	কিতোশি	০২ মিনিট। লি পার লি
3	ডাউনি মিলডিউ -	রিডোমিল গোল্ড	০২ গ্রাম প্রতি লিটার
4	কাঠকয়লার পচা -	থামো	০২ গ্রাম প্রতি লিটার
5	মরিচা রোগ-	ইন্দোফিল	০২ গ্রাম প্রতি লিটার
6	ভুট্টার পোকা	ফোর্টেনজা ডুও	০৬ মিনিট। প্রতি কেজি লিটার (বীজ শোধন)
		কোরাজন	প্রতি ১৫ লিটারে ০৫ মিলি।
7	মাহু,	কনফিডর	০.৫ মিনিট। লি পার লি
8	লিফ ফড়িং	অ্যাক্টোরা	প্রতি ১৫ লিটারে ০৬ গ্রাম
9	পতনের আর্মি ওয়ার্ম	ফোর্টেনজা ডুও	০৬ মিনিট। প্রতি কেজি লিটার (বীজ শোধন)
		ট্রেসার	প্রতি ১৫ লিটারে ০৫ মিলি।

সেচ ব্যবস্থাপনা: মিষ্টি ভুট্টা চাষে সঠিক সেচ ব্যবস্থাপনা খুবই গুরুত্বপূর্ণ। খরিফ মৌসুমে যদি প্রাকৃতিক বৃষ্টিপাত পর্যাপ্ত না হয়, তাহলে প্রয়োজন অনুসারে সেচ দেওয়া উচিত। রবি মৌসুমে মিষ্টি ভুট্টার জন্য ৪-৬টি সেচের প্রয়োজন হয়, বিশেষ করে শস্যের বীজের বিকাশ এবং দুধের মতো অবস্থায়। ড্রিপ সেচ ব্যবস্থা সেচের জন্য সবচেয়ে উপযুক্ত, কারণ এটি জল সাশ্রয় করে এবং গাছগুলিকে সমানভাবে জল সরবরাহ করে। সেচের সময়, জমিতে নিষ্কাশন ব্যবস্থার দিকে খেয়াল রাখুন, যাতে পানি জমে না থাকে এবং ফসলের ক্ষতি না হয়। ভারী মাটিতে ৪-৫টি এবং হালকা মাটিতে ৭-৮টি সেচের প্রয়োজন হয়।

আগাছা ব্যবস্থাপনা: মিষ্টি ভুট্টা ফসলে আগাছা নিয়ন্ত্রণ খুবই গুরুত্বপূর্ণ কারণ তারা ফসলের পুষ্টি উপাদান ব্যবহার করে এবং ফসলের বৃদ্ধিকে প্রভাবিত করে। আগাছা নিয়ন্ত্রণের জন্য, নিয়মিত জমি পরিষ্কার করুন এবং আগাছা দমন করুন। এছাড়াও, আগাছানাশক ব্যবহারের ফলে আগাছা সহজেই ধ্বংস হয় এবং ফসল ভালোভাবে জন্মে।

মিষ্টি ভুট্টা ফসলে আগাছা নিয়ন্ত্রণ-
১. মিষ্টি ভুট্টা ফসলে আগাছা সমস্যা নিয়ন্ত্রণের জন্য নিয়মিত জমির আগাছা পরিষ্কার করা গুরুত্বপূর্ণ।
নিড়ানি পরিষ্কার করুন এবং আগাছানাশক ব্যবহার করুন যেমন-
2. বেয়ার লাউডিস হার্বিসাইড - লাউডিস হারবিসাইড টেম্বোট্রিয়ন 42% SC
প্রতি একরে ১৫০ মিলি হারে (টেম্বোট্রিওন ৪২% এসসি) স্প্রে করুন।

ফসল কাটা: মিষ্টি ভুট্টা কাটার সঠিক সময় খুবই গুরুত্বপূর্ণ। ভুট্টার বাইরের স্তর সবুজ এবং আঠালো হলেই তা সংগ্রহ করা উচিত। এটি সাধারণত বপনের ৬০-৯০ দিন পরে ঘটে।

দ্রষ্টব্য:- উপরের সমস্ত তথ্য আমাদের গবেষণা কেন্দ্রে পরিচালিত পরীক্ষার উপর ভিত্তি করে। বিভিন্ন স্থানে বিভিন্ন জলবায়ু, মাটির ধরণ এবং ঋতুর কারণে উপরোক্ত তথ্যগুলি ভিন্ন হতে পারে।

ਮਾਰਕਫੀਲਡ ਹਾਈਬ੍ਰਿਡ ਸੀਡਜ਼ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਲਿਮਟਿਡ ਲਿਮਟਿਡ
ਬੀ-3, ਐਡੀਸ਼ਨਲ ਇੰਡਸਟਰੀਅਲ ਅਸਟੇਟ, ਜਾਲਨਾ, ਕਸਟਮਰ ਕੇਅਰ ਮੁਹੰਮਦ। ਨੰ. 9405782668

ਮਿੱਠੀ ਮੱਕੀ

ਕਿਸਮਾਂ:- ਸਵੀਟੀ, ਸਵੀਟ ਹਾਰਟ

ਮਿੱਟੀ: :- ਚੰਗੇ ਨਿਕਾਸ ਵਾਲੀ ਰੇਤਲੀ ਦੋਮਟ ਜਾਂ ਚੀਕਣੀ ਮਿੱਟੀ ਮਿੱਠੀ ਮੱਕੀ ਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਲਈ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ, ਮਿੱਟੀ ਦਾ pH ਮੁੱਲ 5.5 ਤੋਂ 7.0 ਦੇ ਵਿਚਕਾਰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਰੇਤਲੀ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਵੀ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਉਗਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਬਸ਼ਰਤੇ ਕਿ ਉੱਥੇ ਸਹੀ ਨਿਕਾਸੀ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਹੋਵੇ ਕਿਉਂਕਿ ਪਾਣੀ ਦਾ ਖੜੋਤ ਪੌਦਿਆਂ ਦੇ ਵਾਧੇ ਨੂੰ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਜਲਵਾਯੂ:- ਗਰਮ ਅਤੇ ਨਮੀ ਵਾਲਾ ਜਲਵਾਯੂ ਮਿੱਠੀ ਮੱਕੀ ਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਲਈ ਵਧੀਆ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਫ਼ਸਲ 18°C ਤੋਂ 30°C ਦੇ ਤਾਪਮਾਨ ਵਿੱਚ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਉੱਗਦੀ ਹੈ। ਪੌਦਿਆਂ ਦੇ ਸਹੀ ਵਿਕਾਸ ਲਈ ਭਰਪੂਰ ਧੁੱਪ ਅਤੇ ਨਿਯਮਤ ਬਾਰਿਸ਼ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ, ਇਹ ਫਸਲ ਖਾਸ ਕਰਕੇ ਮਾਨਸੂਨ ਅਤੇ ਗਰਮ ਮੌਸਮ ਵਿੱਚ ਉਗਾਈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਬਿਜਾਈ ਦਾ ਸਮਾਂ: ਸਾਉਣੀ ਦੇ ਮੌਸਮ ਵਿੱਚ - ਜੂਨ ਦੇ ਆਖਰੀ ਹਫ਼ਤੇ ਤੋਂ ਜੁਲਾਈ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਹਫ਼ਤੇ ਤੱਕ।
ਹਾੜੀ ਦੇ ਮੌਸਮ ਵਿੱਚ - ਅਕਤੂਬਰ ਦਾ ਦੂਜਾ ਪੰਦਰਵਾੜਾ। ਜ਼ੈਦ ਸੀਜ਼ਨ ਵਿੱਚ - ਮਾਰਚ ਦਾ ਦੂਜਾ ਪੰਦਰਵਾੜਾ।
ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਬੀਜ ਦੀ ਦਰ ਅਤੇ ਪੌਦਿਆਂ ਦਾ ਫਾਸਲਾ-
1. ਮਿੱਠੀ ਮੱਕੀ ਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਲਈ ਬੀਜ ਦੀ ਦਰ ਲਗਭਗ 4-5 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਹੈ।
2. ਮਿੱਠੇ ਮੱਕੀ ਦੇ ਪੌਦਿਆਂ ਦੀ ਬਿਜਾਈ ਲਈ, 20-30 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਦੀ ਦੂਰੀ 'ਤੇ ਲਗਾਉਣ ਦੀ ਸਿਫਾਰਸ਼ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।
3. ਪੌਦਿਆਂ ਵਿਚਕਾਰ ਦੂਰੀ 60-75 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਰੱਖੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਖਾਦ ਪ੍ਰਬੰਧਨ: ਮਿੱਠੀ ਮੱਕੀ ਦੀ ਉੱਨਤ ਕਾਸ਼ਤ ਵਿੱਚ ਖਾਦਾਂ ਬਹੁਤ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਹਨ। ਇਸ ਦੇ ਲਈ, ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ 8-10 ਟਨ ਗਾਂ ਦੀ ਖਾਦ ਪਾਓ, ਜੋ ਜ਼ਮੀਨ ਨੂੰ ਉਪਜਾਊ ਬਣਾਉਣ ਵਿੱਚ ਮਦਦ ਕਰਦੀ ਹੈ।

ਨਹੀਂ।	ਰਸਾਇਣਕ ਖਾਦ ਪ੍ਰਤੀ ਹੈਕਟੇਅਰ	ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ (ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ)	ਫਾਸਫੋਰਸ (ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ)	ਪੋਟਾਸ਼ (ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ)
1	ਬਿਜਾਈ ਦੇ ਸਮੇਂ	30	60	40
2	15 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ	35	00	00
3	30 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ	35	00	00
	ਕੁੱਲ	100	60	40

ਰੋਗ ਅਤੇ ਕੀਟ ਨਿਯੰਤਰਣ ਰਸਾਇਣਕ ਦਵਾਈ ਦੀ ਖੁਰਾਕ ਅਤੇ ਸਮਾਂ:-

ਫਰਟੇਰਾ (ਡੁਪੌਂਡ) 4 ਕਿਲੋ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਜਾਂ ਵਰਟੀਕੋ (ਸਿੰਜੈਂਟਾ) 2.5 ਕਿਲੋ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਖਾਦ ਦੇ ਨਾਲ ਵਰਤਣ ਨਾਲ 21 ਦਿਨਾਂ ਲਈ ਰਸ ਚੂਸਣ ਵਾਲੇ ਕੀੜਿਆਂ ਤੋਂ ਸੁਰੱਖਿਆ ਮਿਲਦੀ ਹੈ।

ਨਹੀਂ।	ਕੀੜੇ ਅਤੇ ਬਿਮਾਰੀਆਂ	ਨਿਯੰਤਰਣ	ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ ਪਾਣੀ ਦੀ ਮਾਤਰਾ
1	ਮੱਕੀ ਦਾ ਝੁਲਸ ਰੋਗ	ਸਾਫ਼	02 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ
2	ਪੱਤਿਆਂ ਦਾ ਝੁਲਸ ਰੋਗ	ਕੀਤੇਸ਼ੀ	02 ਮਿੰਟ ਲੀ ਪਰ ਲੀ
3	ਡਾਊਨੀ ਫ਼ਫ਼ੂੰਦੀ -	ਰਿਡੋਮਿਲ ਗੋਲਡ	02 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ
4	ਕੋਲੇ ਦੀ ਸੜਨ -	ਰੂਕੋ	02 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ
5	ਜੰਗਾਲ ਰੋਗ-	ਇੰਡੋਫਿਲ	02 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ
6	ਮੱਕੀ ਦਾ ਛੇਦਕ	ਫੋਰਟੇਂਜ਼ਾ ਡੂਓ	06 ਮਿੰਟ ਲੀਟਰ ਪ੍ਰਤੀ ਕਿਲੋ (ਬੀਜ ਸੋਧ)
		ਕੋਰਾਜ਼ੋਨ	05 ਮਿ.ਲੀ. ਪ੍ਰਤੀ 15 ਲੀਟਰ।
7	ਮਾਹੂ,	ਕਨਫੀਡਰ	0.5 ਮਿੰਟ ਲੀ ਪਰ ਲੀ
8	ਪੱਤਾ ਹੌਪਰ	ਐਕਟੋਰਾ	06 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ 15 ਲੀਟਰ
9	ਪਤਝੜ ਫੌਜ ਦਾ ਕੀੜਾ	ਫੋਰਟੇਂਜ਼ਾ ਡੂਓ	06 ਮਿੰਟ ਲੀਟਰ ਪ੍ਰਤੀ ਕਿਲੋ (ਬੀਜ ਸੋਧ)
		ਟਰੇਸਰ	05 ਮਿ.ਲੀ. ਪ੍ਰਤੀ 15 ਲੀਟਰ।

ਸਿੰਚਾਈ ਪ੍ਰਬੰਧਨ: ਮਿੱਠੀ ਮੱਕੀ ਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਵਿੱਚ ਸਹੀ ਸਿੰਚਾਈ ਪ੍ਰਬੰਧਨ ਬਹੁਤ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਸਾਉਣੀ ਦੇ ਮੌਸਮ ਵਿੱਚ ਕੁਦਰਤੀ ਮੀਂਹ ਕਾਫ਼ੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ, ਤਾਂ ਲੋੜ ਅਨੁਸਾਰ ਸਿੰਚਾਈ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਰਬੀ ਦੇ ਮੌਸਮ ਦੌਰਾਨ ਮਿੱਠੀ ਮੱਕੀ ਨੂੰ 4-6 ਸਿੰਚਾਈਆਂ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਖਾਸ ਕਰਕੇ ਦਾਣੇ ਦੇ ਵਿਕਾਸ ਅਤੇ ਦਾਣੇ ਦੇ ਦੁੱਧ ਵਾਲੇ ਪੜਾਅ ਦੌਰਾਨ। ਤੁਪਕਾ ਸਿੰਚਾਈ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਸਿੰਚਾਈ ਲਈ ਸਭ ਤੋਂ ਢੁਕਵੀਂ ਹੈ, ਕਿਉਂਕਿ ਇਹ ਪਾਣੀ ਦੀ ਬਚਤ ਕਰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਪੌਦਿਆਂ ਨੂੰ ਸਮਾਨ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਪਾਣੀ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਸਿੰਚਾਈ ਦੌਰਾਨ, ਖੇਤ ਵਿੱਚ ਪਾਣੀ ਦੀ ਨਿਕਾਸੀ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਦਾ ਧਿਆਨ ਰੱਖੋ, ਤਾਂ ਜੋ ਪਾਣੀ ਇਕੱਠਾ ਨਾ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਫਸਲ ਨੂੰ ਨੁਕਸਾਨ ਨਾ ਹੋਵੇ। ਭਾਰੀ ਮਿੱਟੀ ਨੂੰ 4-5 ਸਿੰਚਾਈਆਂ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਹਲਕੀ ਮਿੱਟੀ ਨੂੰ 7-8 ਸਿੰਚਾਈਆਂ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਨਦੀਨਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਬੰਧਨ: ਮਿੱਠੀ ਮੱਕੀ ਦੀ ਫਸਲ ਵਿੱਚ ਨਦੀਨਾਂ ਦਾ ਨਿਯੰਤਰਣ ਬਹੁਤ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਇਹ ਫਸਲ ਦੇ ਪੌਸ਼ਟਿਕ ਤੱਤਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਫਸਲ ਦੇ ਵਾਧੇ ਨੂੰ ਪ੍ਰਭਾਵਤ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਨਦੀਨਾਂ ਨੂੰ ਕੰਟਰੋਲ ਕਰਨ ਲਈ, ਖੇਤ ਨੂੰ ਨਿਯਮਿਤ ਤੌਰ 'ਤੇ ਸਾਫ਼ ਕਰੋ ਅਤੇ ਨਦੀਨ ਨਾਸ਼ ਕਰੋ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ, ਨਦੀਨਨਾਸ਼ਕਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਨਾਲ, ਨਦੀਨ ਆਸਾਨੀ ਨਾਲ ਨਸ਼ਟ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਫਸਲ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਵਧਦੀ ਹੈ।

ਮਿੱਠੀ ਮੱਕੀ ਦੀ ਫਸਲ ਵਿੱਚ ਨਦੀਨਾਂ ਦੀ ਰੋਕਥਾਮ-
1. ਮਿੱਠੀ ਮੱਕੀ ਦੀ ਫਸਲ ਵਿੱਚ ਨਦੀਨਾਂ ਦੀ ਸਮੱਸਿਆ ਨੂੰ ਕੰਟਰੋਲ ਕਰਨ ਲਈ ਖੇਤ ਦੀ ਨਿਯਮਤ ਗੋਡੀ ਕਰਨਾ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਹੈ।
ਗੋਡੀ ਕਰੋ ਅਤੇ ਨਦੀਨ ਨਾਸ਼ਕਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰੋ ਜਿਵੇਂ ਕਿ-
2. ਬੇਅਰ ਲੌਂਡਿਸ ਹਰਬੀਸਾਈਡ - ਲੌਂਡਿਸ ਹਰਬੀਸਾਈਡ ਟੈਂਬੋਟ੍ਰੀਅਨ 42% ਐਸ.ਸੀ.
(ਟੈਂਬੋਟ੍ਰੀਓਨ 42% ਐਸਸੀ) 150 ਮਿਲੀਲੀਟਰ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਦੀ ਦਰ ਨਾਲ ਸਪਰੇਅ ਕਰੋ।

ਵਾਢੀ: ਮਿੱਠੀ ਮੱਕੀ ਦੀ ਵਾਢੀ ਲਈ ਸਹੀ ਸਮਾਂ ਬਹੁਤ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਮੱਕੀ ਦੀ ਕਟਾਈ ਉਦੋਂ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ ਜਦੋਂ ਇਸਦੀ ਬਾਹਰੀ ਪਰਤ ਹਰੀ ਅਤੇ ਚਿਪਚਿਪੀ ਹੋਵੇ। ਇਹ ਆਮ ਤੌਰ 'ਤੇ ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ 60-90 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

ਨੋਟ:- ਉਪਰੋਕਤ ਸਾਰੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਸਾਡੇ ਖੋਜ ਕੇਂਦਰ ਵਿਖੇ ਕੀਤੇ ਗਏ ਪ੍ਰਯੋਗਾਂ 'ਤੇ ਅਧਾਰਤ ਹੈ। ਉਪਰੋਕਤ ਜਾਣਕਾਰੀ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਥਾਵਾਂ 'ਤੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਜਲਵਾਯੂ, ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਕਿਸਮ ਅਤੇ ਮੌਸਮਾਂ ਦੇ ਕਾਰਨ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ।